जुमा भाषण

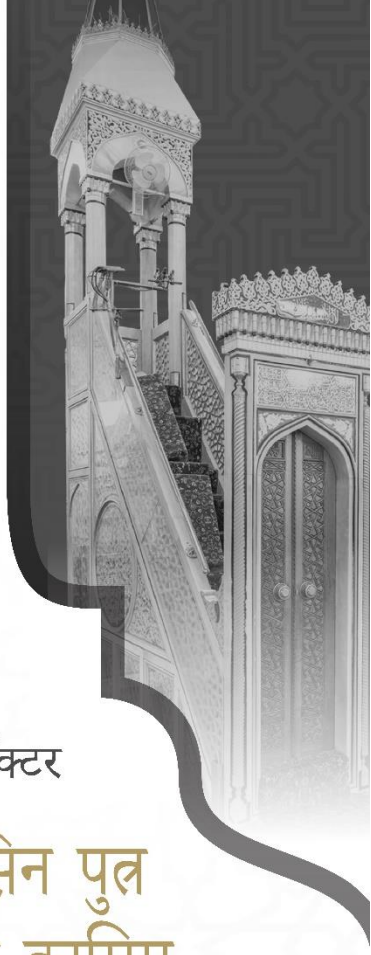

2023/6/23 م

٥/١٢/١٤٤٤هـ

फ़ज़ीलतुश्शेख़ डॉक्टर

अब्दुल मुहसिन पुत्र मुहम्मद अल क़ासिम

इमाम एवं उपदेशक : मस्जिद नबवी शरीफ़

शीर्षक

ज़िल्हिज्जा के दस दिनों के कर्म

a-alqasim.com

ज़िल-हिज्जा के दस दिनों के कर्म[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वो जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूं कि हमारे पैगंबर मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं। अल्लाह की ओर से बहुत ज़्यादा सलाम व शांति हो उन पर उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बाद[2]

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए और उसे रहस्य, और गोपनीय कर्मों पर भी निगरान मानो।

अय्युहल मुस्लिमून![3]

अल्लाह की कृपा और अनुकंपा से भक्तों के लिए भलाइयों के अवसर नए-नए रूप में आते रहते हैं, एक पवित्र अनुष्ठान समाप्त नहीं होता कि दूसरी इबादत आ जाती है, ताकि भक्त इनमें अपने पापों को धो सकें और इनके द्वारा उनके दर्जे बुलंद हों।

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 5/12/1444 हिजरी को दिया गया।

([2]) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

([3]) हे मुस्लिमो!

हमें बरकत वाले दस दिनों[1] ने अपनी शीतल छाया में ले लिया है, यह सबसे श्रेष्ठ, उत्तम, प्रतिष्ठित और महान दिन हैं, अल्लाह ने इन दिनों की कसम खाई है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱلۡفَجۡرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشۡرٖ﴾

कसम है उषाकाल की, कसम है दस रातों की। (अल-फज्र: 1-2)

श्री मसरूक़ कहते हैं: "यह दस दिन अज़हा (क़ुरबानी) के दस दिन हैं, यह साल के सर्वश्रेष्ट दिन हैं।" यह अल्लाह के पवित्र दिनों में से हैं, यह दस दिन उन ज्ञात महीनों का अंत हैं, जिनके बारे में अल्लाह ने कहा है:

﴿ٱلۡحَجُّ أَشۡهُرٞ مَّعۡلُومَٰتٞۚ﴾

हज के कुछ जाने पहचाने और निश्चित महीने हैं। (अल-बक़रह: 197)

श्री का'ब (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "पवित्र महीनों में अल्लाह के निकट सबसे प्रिय महीना ज़ुल-हिज्जा है और ज़ुल-हिज्जा में सबसे पवित्र दिन उसके प्रारंभिक दस दिन हैं।" इस महीने के दस दिन रमज़ान महीने के अंतिम दस दिनों से भी उत्तम है, पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ का कथन है: "दुनिया के सबसे उत्तम दिन ज़िल-हिज्जा के दस दिन हैं।" (सही इब्ने-हिब्बान) इस्लाम के महान विद्वान इब्ने-तैमिया (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "ज़ुल-हिज्जा के दस दिन रमज़ान के दस दिनों से उत्तम हैं और रमज़ान की अंतिम दस रातें ज़ुल-हिज्जा के दस दिनों की रातों से उत्तम हैं।"

[1] अर्थात: ज़िल-हिज्जा के शुरुआती दस दिन।

ज़िल-हिज्जा के दस दिनों का महत्व इसमें बुनियादी इबादतों -जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा और हज- के एकत्रित होने के कारण है, जबकि ये इबादतें एक साथ दूसरे दिनों में नहीं आतीं।

रातों और दिनों के बीच श्रेष्ठता का अंतर उनमें अच्छाई ग्रहण करने की ओर बुलाता है, इन दस दिनों के सदुपयोग का तरीक़ा यह है कि इनमें अधिक से अधिक अच्छे कर्म किए जाएं; क्योंकि इन दिनों में अच्छा कर्म अल्लाह के निकट दूसरे दिनों के वैसे ही कर्म से अधिक प्रिय है, पैग़ंबर ﷺ का कथन है: "दूसरे दिनों का कर्म ज़िल-हिज्जा के दस दिनों के कर्म से उत्तम नहीं हो सकता" लोगों ने पूछा: क्या जिहाद भी नहीं? आपने फ़रमाया: "जिहाद भी नहीं; हाँ यह अलग बात है कि एक व्यक्ति स्वयं को और अपने धन को जोखिम में डालकर निकल पड़ा हो, फिर वह किसी भी चीज़ को लेकर ना लौटा हो।" (सही बुखारी) इब्ने-रजब (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "यह हदीस इस बात का प्रमाण है कि ज़िल-हिज्जा के दस दिनों का कर्म बिना अपवाद अल्लाह के निकट दुनिया के दूसरे दिनों के कर्म से अधिक प्रिय है।" सलफ़ [1]इन दिनों में अच्छे कर्म करने में परिश्रम करते थे, श्री सईद बिन जुबेर (उन पर अल्लाह की दया हो) का हाल यह था कि जब ज़िल-हिज्जा के दस दिन शुरू होते तो ऐसा परिश्रम करते जिसकी क्षमता शायद ही किसी में होती।"

अल्लाह की कृपा और अनुकंपा का एक हिस्सा यह है कि इन दस दिनों में आज्ञाकारिता के काम भिन्न भिन्न हैं, इनमें अनुमेय कर्मों में से एक अधिक से अधिक अल्लाह का ज़िक्र करना है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَيَذۡكُرُواْ ٱسۡمَ ٱللَّهِ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡلُومَٰتٖ﴾.

([1]) सलफ़: इस्लाम के पूर्वज विद्वान गण, जिनमें अल्लाह के रसूल ﷺ के अनुयायी, उनके बाद वाले और उनके बाद वाले आते हैं।

और ताकि वे निश्चित दिनों में अल्लाह के नाम का जिक्र करें (अल-हज: 28)

श्री इब्ने-अब्बास (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: "निश्चित दिनों से मुराद दस दिन हैं।" इन दिनों में पवित्र प्रभु का ज़िक्र करना उसकी निकटता प्राप्त करने का सबसे उत्तम अवसर है, पैग़ंबर ﷺ का कथन है: "अल्लाह की नज़र में इन दस दिनों में किए गए कर्म से अधिक महान और प्रिय कोई कर्म नहीं है, इसलिए आप इन दिनों में ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर और अलहम्दु लिल्लाह प्रचुर मात्रा में पढ़ा करो।" (मुस्नद अहमद) श्री नववी (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा : "इन दस दिनों में दूसरे दिनों से अधिक प्रचूर मात्रा में ज़िक्र करना वांछनीय है और अरफा के दिन शेष दस दिनों से भी अधिक ज़िक्र करना वांछनीय है।" सबसे उत्तम ज़िक्र अल्लाह की किताब का पाठ है; क्योंकि यह मार्गदर्शन और स्पष्ट प्रकाश है।

हर समय अनिश्चित रूप में तकबीर[1] कहना ज़िल-हिज्जा के दस दिनों के अनुष्ठानों में से एक है, श्री अब्दुल्लाह बिन उमर और श्री अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ज़िल-हिज्जा के दस दिनों में बाज़ार की ओर निकल जाते और तकबीर कहते और उनकी तकबीरों पर लोग भी तकबीर कहा करते थे।" (सही बुखारी का मुअल्लक़ वर्णन) इसी प्रकार हाजियों और गैर हाजियों के लिए अरफा के दिन फज्र से लेकर तश्रीक़ के अंतिम दिन की अस्र तक फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के बाद निश्चित तकबीर कहना भी अनुमेय है।

दान एक पुण्य का काम है, जिससे कष्ट दूर होते हैं और दुख समाप्त होते हैं, यह आवश्यकता के समय सर्वोत्तम और युगों में प्रतिष्ठित कर्म होता

(1) तकबीर: अल्लाहु अकबर कहना।

है। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "विधवाओं और निर्धनों के लिए दौड़धूप करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है।" और मुझे लगता है कि आपने यह भी कहा था: "तथा रात्रि में नमाज़ पढ़ने वाले उस व्यक्ति की तरह है, जो थकता न हो और उस रोज़ेदार की तरह है, जो कभी रोज़ा छोड़ता ना हो" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

ज़िल-हिज्जा के दस दिनों के कुछ वांछनीय कर्म इस प्रकार हैं: उनमें से पहले नौ दिनों के रोज़े रखना, नववी (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं, "यह कर्म अत्यंत वांछनीय है।" जबकि अरफा के दिन का रोज़ा "पिछले और अगले साल के पापों को नष्ट कर देता है।" (सही मुस्लिम) लेकिन हाजी के लिए उत्तम यह है कि वह पैग़ंबर ﷺ की पद्धति का अनुसरण करते हुए तथा अधिकाधिक विनती और दुआ करने हेतु अपनी शक्ति को संरक्षित करने के लिए रोज़ा न रखे।

अरफा का दिन मुस्लिमों की विशाल सभा का समय है, यह आशा, श्रद्धा, विनम्रता और समर्पण का दिन है, यह मुस्लिमों के लिए एक उदार दिन है, क्यूंकि "अरफा के दिन के अलावा ऐसा कोई दिन नहीं है जब अल्लाह सबसे अधिक बंदों को नरक से मुक्त करता है।" (सही मुस्लिम) इस्लाम के महान विद्वान इब्ने-तैमिया (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अरफ़ा की पूर्व संध्या पर हाजियों के दिलों पर जो विश्वास, दया, प्रकाश और आशीर्वाद की वर्षा होती है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।"

दुआ बड़े दर्जे और उच्च स्थान वाली है, भक्त अपनी ज़रूरतों को अपने प्रभु के सामने रखता है, उससे उसकी लगातार उदारता की मांग करता है और उसकी आज्ञा के अनुपालन में अपने दिल से उसकी ओर मुड़ता है:

﴿فَٱدۡعُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ﴾.

अतः तुम अल्लाह ही को, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए, पुकारो (ग़ाफिर: 14)

तो उसके समक्ष अपनी मांगें प्रस्तुत करो, अरफा और दूसरे दिनों में भी अपने संकट के प्रति उससे वार्तालाप करो, दुआ कबूल होने का विश्वास रखो, परम उदार प्रभु से गुहार लगाते रहो; क्योंकि वह सर्वज्ञ निर्माता है:

﴿إِنَّمَآ أَمۡرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيۡـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾.

उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कहता है, "हो जा" और वह हो जाती है। (यासीन: 82)

इब्ने-अब्दुल-बर (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अरफा के दिन की दुआ अधिकतर पूरी कबूल होती है।"

ज़िल-हिज्जा के दस दिनों में "यौमुन-नह्र" (क़ुरबानी दिवस) है जो अल्लाह के निकट महानतम दिनों में से है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट सबसे महान दिन क़ुरबानी का दिन है।" (सुनन अबू-दाऊद) यह अल्लाह के निकट अत्यंत पवित्र दिन है, पैग़ंबर ﷺ ने अपने अंतिम हज के दौरान क़ुरबानी के दिन अपने उपदेश में फ़रमाया: "सुनो सबसे पवित्र दिन तुम्हारा यही दिन है और सबसे पवित्र महीना यही महीना है।" (मुस्नद अहमद) यह दिन मुसलमानों की दो ईदों में से एक ईद का दिन है, यह इस्लाम के स्तंभों में से एक स्तंभ को अदा करने पर खुशी मनाने का दिन है।

यह हज के अनुष्ठानों के दिनों में सबसे उत्तम, सबसे प्रकाशमय और सबसे बड़ी सभा वाला दिन है, यही "महान हज" का दिन है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَأَذَانٌ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦٓ إِلَى ٱلنَّاسِ يَوۡمَ ٱلۡحَجِّ ٱلۡأَكۡبَرِ﴾.

महान हज के दिन लोगों के लिए अल्लाह और उसके रसूल की ओर से सार्वजनिक उद्घोषणा है। (अल-तौबा: 3)

क़ुरबानी के दिन अल्लाह ने अपने पैग़ंबर ﷺ और विश्वासियों को सूचना दी कि उसने उनके लिए अपना धर्म परिपूर्ण कर दिया है; अब उन्हें कभी और अधिक की आवश्यकता न होगी, अल्लाह ने इसे पूरा कर दिया है; अब इसमें कभी कोई कमी नहीं आएगी और अल्लाह इससे राज़ी है; कभी नाराज़ नहीं होगा, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗاۚ﴾.

आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म परिपूर्ण कर दिया, तुम पर अपनी अनुकंपा पूरी कर दी और धर्म के रूप में इस्लाम को पसंद कर लिया। (अल-माइदा: 3)

इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "यह इस क़ौम पर सर्वशक्तिमान अल्लाह का सबसे बड़ा आशीर्वाद है कि सर्वशक्तिमान प्रभु ने क़ौम के लिए उनके धर्म को परिपूर्ण बनाया, अत: उन्हें इसके अलावा किसी अन्य धर्म की आवश्यकता नहीं है, न ही अपने पैग़ंबर के अलावा किसी पैग़ंबर की।"

महान अल्लाह पुनरुत्थान के दिन प्रत्येक नबी से उसकी क़ौम तक संदेश पहुंचाने के बारे में पूछेगा, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "और मेरे बारे में तुमसे पूछा जाएगा" (सही मुस्लिम) और क़ुरबानी के दिन पैग़ंबर ﷺ ने अपने साथियों से पूछा: "क्या मैंने प्रभु का संदेश पहुंचा दिया?" लोगों ने

कहा: हाँ, तो आपने फ़रमाया: "हे अल्लाह गवाह रहना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसी महान दिन में पैग़ंबर ﷺ ने अपनी क़ौम को सभी लोगों तक धर्म के प्रचार प्रसार की वसीयत की, आपने फ़रमाया: "उपस्थित लोग अनुपस्थित लोगों तक बात पहुंचा दें, कई बार एक श्रोता से अधिक समझदार वह होता है जिसे बात पहुँचाई जाती है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) मज़हरी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: यह लोगों को पैग़ंबर ﷺ की हदीसें और दूसरे धार्मिक ज्ञान सिखलाने पर प्रोत्साहन है; क्योंकि अगर पठन-पाठन ना होता तो लोगों के बीच ज्ञान समाप्त हो गया होता।"

ईद में लोगों की खुशी के चलते कुछ लोग अल्लाह के ज़िक्र के प्रति लापरवाह हो जाते हैं, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖۚ﴾.

और गिने हुए दिनों के दौरान अल्लाह का जिक्र करो। (अल-बक़रह: 203)

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: "गिने चुने दिन: तशरीक के दिन हैं, यह क़ुरबानी के बाद के तीन दिन हैं।" पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "तशरीक के दिन: खाने, पीने और अल्लाह को याद करने के दिन हैं।" (सही मुस्लिम) इब्ने-हजर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "दस दिनों की गुणवत्ता प्रमाणित है, अतः इन्हीं के द्वारा तश्रीक के दिनों की भी गुणवत्ता साबित होती है।"

क़ुर्बानी और तशरीक़ के दिनों में एक शारीरिक व आर्थिक इबादत है, जोकि अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कर्मों में से एक है, अल्लाह ने इसे नमाज़ से जोड़ा है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنۡحَرۡ﴾.

आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुरबानी कीजिए (अल-कौसर: 2)

अल्लाह ने क़ुरबानी में इख्लास (नीयत की शुद्धता) पर ज़ोर दिया है, तथा इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि इरादा केवल अल्लाह के लिए हो, घमंड, दिखावा, प्रतिष्ठा या केवल एक आदत के रूप में न हो, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿لَن يَنَالَ ٱللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَٰكِن يَنَالُهُ ٱلتَّقۡوَىٰ مِنكُمۡ﴾.

न उनके माँस अल्लाह को पहुँचते है और न उनके रक्त। किन्तु उसे तुम्हारा तक़वा (धर्मपरायणता) पहुँचता है। (अल-हज: 37)

पैग़ंबर ﷺ ने दो चितकब्रे सिंग वाले भेड़ों की क़ुरबानी दी और उन्हें अपने हाथ से ज़बह (वध) किया। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) हदीस में "अमलह" (चितकब्रा) शब्द आया है: अर्थात: ऐसा काल जानवर जिसके बालों के ऊपर सफेदी हो।

सर्वश्रेष्ट क़ुरबानी है जिसका जानवर सबसे महंगा और अपने लोगों के लिए सबसे मूल्यवान हो, एक मुस्लिम के लिए अनिवार्य है कि उसकी ऊंची कीमत को लेकर परेशान ना हो; क्योंकि अल्लाह के निकट इसका पुण्य बड़ा महान है। एक बकरी आदमी और उसके घर के सदस्यों की ओर से पर्याप्त है, क़ुरबानी करने के लिए उधार लेने पर कोई आपत्ती नहीं है, इसलिए क़ुरबानी के प्रति अपने मन को साफ रखो, खाओ, खिलाओ, दान

करो और दान के लिए गरीबों को तथा क़ुरबानी के उपहार के लिए अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को तलाश करो।

जो क़ुरबानी की इच्छा रखता है उस पर दस दिनों के दौरान बाल और नाखून काटना हराम हो जाता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जिसके पास क़ुरबानी करने के लिए जानवर हो और ज़ुल-हिज्जा का चांद निकल आए तो क़ुरबानी करने तक अपने बाल और नाखूनों को ना काटे।" (सही मुस्लिम)

दया और भलाई के मौसम में पाप करने से उसकी खतरनाकी बहुत बढ़ जाती है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿إِنَّ عِدَّةَ ٱلشُّهُورِ عِندَ ٱللَّهِ ٱثۡنَا عَشَرَ شَهۡرٗا فِي كِتَٰبِ ٱللَّهِ يَوۡمَ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ مِنۡهَآ أَرۡبَعَةٌ حُرُمٞۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلۡقَيِّمُۚ فَلَا تَظۡلِمُواْ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمۡۚ﴾.

निस्संदेह अल्लाह के निकट महीनों की संख्या, उसी दिन से जब उसने आकाशों और धरती को पैदा किया था, बारह महीने है। उनमें चार आदर वाले हैं, यही सीधा धर्म है। अतः तुम उन (महीनों) में अपने ऊपर अत्याचार न करो। (अल-तौबा: 36)

क़तादह (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "अन्य महीनों में अन्याय की तुलना में पवित्र महीनों में अन्याय अधिक बड़ा पाप और बोझ है, भले ही अन्याय हर परिस्थिति में बड़ा पाप हो, लेकिन अल्लाह अपनी इच्छानुसार जिस आदेश को चाहता है महानता देता है।"

फिर हे मुस्लिमो!

सौभाग्यशाली है वह व्यक्ति: जो महीनों, दिनों और घड़ियों के इन अवसरों का सदुपयोग करता है और इनमें आज्ञाकारिता के कर्मों द्वारा अपने प्रभु की निकटता प्राप्त कर लेता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूं

﴿سَابِقُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ أُعِدَّتۡ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۚ ذَٰلِكَ فَضۡلُ ٱللَّهِ يُؤۡتِيهِ مَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلۡفَضۡلِ ٱلۡعَظِيمِ﴾.

अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर अग्रसर होने में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाओ, जिसका विस्तार आकाश और धरती के विस्तार जैसा है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों। यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, वह जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह बड़े उदार अनुग्रह का मालिक है। (अल-हदीद: 21)

अल्लाह मुझे और तुम्हें महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा खुतबा

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है उसकी भलाई पर, कृतज्ञता उसी के लिए है उसके मार्गदर्शन और कृपा पर, अल्लाह की महिमामंडन के लिए मैं गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, मैं गवाही देता हूं कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ अल्लाह के भक्त और दूत हैं, अल्लाह उन पर और उनके परिवार और साथियों पर दरुद व सलाम (शांति) अवतीर्ण करे।

हे मुस्लिमो!

धर्म में तौबा का स्थान बड़ा बुलंद है, यह सफलता एवं सुख का साधन है, अल्लाह ने सभी बंदों के लिए हर पाप के प्रति तौबा को अनिवार्य किया है, अल्लाह ने उस व्यक्ति से भी कहा है जो उसके लिए किसी साथी या संतान का दावा करता है:

﴿أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى ٱللَّهِ وَيَسۡتَغۡفِرُونَهُۥۚ﴾.

फिर क्या वे लोग अल्लाह की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे। (अल-माइदह: 74)

और ईमान वालों से भी कहा

﴿وَتُوبُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ﴾.

ईमान वालो! तुम सब मिलकर अल्लाह से तोबा करो ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो। (अन-नूर: 31)

पैग़ंबर ﷺ दिन में सौ बार अल्लाह से उसकी मेहरबानी मांगा करते थे, पैगंबर ﷺ का कथन है: "हे लोगो! अल्लाह के समक्ष तौबा करो मैं दिन में सौ बार तौबा करता हूँ।" अर्थात: मैं कहता हूँ: हे प्रभु! मुझ पर मेहरबानी करदे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) हमें तो तौबा की और भी अधिक आवश्यकता है, भक्तों के दिनों में सबसे उत्तम दिन उसकी तौबा का दिन है, पैग़ंबर ﷺ ने श्री का'ब बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हू) से कहा था: "जब से तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म दिया है तब से लेकर अब तक के सबसे अच्छे दिन की शुभ-सूचना स्वीकार करो!" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) वह तौबा करने वाला कितना अच्छा है जो अल्लाह के प्रिय दिनों में अपने पापों से तौबा कर ले! जो अपनी तौबा में सच्चा होगा उसके दर्जे बुलंद होंगे और अल्लाह उसके पापों को पुण्य में बदल देगा।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

خطبة الجمعة

١٤٤٤/١٢/٥هـ

2023/6/23 م

فضيلة الشيخ

د. عبد المحسن بن محمد القاسم

إمام وخطيب المسجد النبوي الشريف

بعنوان

أعمال عشر ذي الحجة

مترجمة باللغة الهندية

a-alqasim.com